जीविका
ग्रामीण विकास विभाग, बिहार सरकार

# जीविका समाचार पत्रिका

।। माह – मई 2025 ।। अंक – 58 ।। केवल आंतरिक वितरण हेतु।।

## अन्दर के पृष्ठों में...

संकल्प और संघर्ष से समृद्धि की ओर कदम (पृष्ठ – 02)

नई शुरुआत से बदला रीता का जीवन (पृष्ठ – 03)

ग्रामीण उद्यमिता से जुड़कर मंजू में आई आर्थिक आत्मनिर्भरता (पृष्ठ – 04)

## स्टार्ट–अप विलेज उद्यमिता कार्यक्रम (एसवीईपी) ग्रामीण परिवारों की आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम

बिहार सरकार द्वारा बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति (जीविका) के माध्यम से लागू की गई स्टार्ट–अप विलेज उद्यमिता कार्यक्रम (एसवीईपी) राज्य के ग्रामीण परिवारों के लिए आजीविका का एक नया और सशक्त माध्यम बन चुका है।

योजना का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करना और उन्हें आर्थिक, तकनीकी एवं प्रशिक्षण आधारित सहायता उपलब्ध कराना है, जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें और अपने गाँव में ही गरिमामय जीवन जी सकें।

**बिहार में एसवीईपी का विस्तार**

अबतक बिहार के 24 जिलों में कुल 146 परिवारों को इस योजना से जोड़ा जा चुका है। ये वे परिवार हैं, जो पहले रोजगार के लिए शहरों की ओर पलायन करने को मजबूर थे। लेकिन एसवीईपी की मदद से अब ये परिवार अपने गाँव में ही स्वरोजगार स्थापित कर आर्थिक गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। इससे ग्रामीण स्तर पर आर्थिक गतिविधियों का विस्तार हुआ है एवं वे सम्मानपूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं।

**योजना की प्रमुख विशेषताएँ**

**1. महिला केंद्रित दृष्टिकोण**

एसवीईपी में विशेष रूप से महिलाओं को लक्षित किया गया है। महिलाओं को स्वयं सहायता समूहों से जोड़कर उन्हें उद्यमिता के लिए प्रेरित किया जाता है। इससे वे न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनती हैं, बल्कि समाज में उनकी भागीदारी और सम्मान भी बढ़ता है।

**2. प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण**

इस योजना के तहत महिलाओं को व्यवसायिक योजना बनाने, हिसाब–किताब रखने, विपणन करने, ग्राहक सेवा और उत्पाद प्रबंधन जैसे विषयों पर व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है। इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ता है और वे अपने व्यवसाय का सफलतापूर्वक प्रबंधन एवं संचालन कर पाती हैं।

**3. ऋण सुविधा**

उद्यम शुरू करने के लिए सामुदायिक उद्यम कोष के माध्यम से महिलाओं को बिना जमानत के ऋण दिया जाता है। यह ऋण सरल और सहज किस्तों में चुकाने की व्यवस्था के साथ दिया जाता है, जिससे उन पर आर्थिक दबाव नहीं पड़ता है।

**4. उद्यम सहयोगी (सीआरपी–ईपी) का मार्गदर्शन**

प्रशिक्षित उद्यम सहयोगी (सीआरपी–ईपी) महिला उद्यमियों को निरंतर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। वे व्यवसाय पंजीकरण, विपणन, लेखा–जोखा, ग्राहक संवाद और डिजिटल प्रक्रिया में सहायता करते हैं।

**सकारात्मक प्रभाव**

146 परिवारों को मिला स्थायी रोजगार : अब ये परिवार आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन चुके हैं और अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य सुविधा दिला पा रहे हैं।

गाँव में ही बढ़ा रोजगार : स्थानीय स्तर पर व्यापार के नए अवसर बने हैं, जिससे युवाओं को बाहर पलायन नहीं करना पड़ रहा है।

महिलाएं बनीं परिवर्तन की वाहक : महिलाएँ अब छोटे–छोटे व्यवसाय जैसे सिलाई, खाद्य प्रसंस्करण, दुकानदारी, सेवाएँ और निर्माण कार्य कर रही हैं, जिससे उनकी भूमिका परिवार और समाज में और मजबूत हुई है।

स्थानीय सेवा उपलब्धता में वृद्धि : गाँव में आवश्यक सेवाएं अब स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध हो रही हैं, जिससे समय और संसाधन की बचत हो रही है।

स्टार्ट–अप विलेज उद्यमिता कार्यक्रम (एसवीईपी) बिहार के ग्रामीण जीवन को एक नई दिशा देने वाला कार्यक्रम है। 24 जिलों में 146 परिवारों को इससे जोड़ा जाना यह साबित करता है कि यह योजना जमीनी स्तर पर असरदार है। यह केवल एक आर्थिक योजना नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम है, जो महिलाओं को सम्मान, आत्मविश्वास और पहचान दिला रहा है।

# संकल्प और संघर्ष से समृद्धि की ओर कदम

गोपालगंज जिला के बजरिया गांव, अमापुर पंचायत, सिधवलिया प्रखंड की रहने वाली अनीता देवी एक साधारण महिला है। वह कभी दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष करती थीं। लेकिन जीविका की मदद से आज वह आत्मनिर्भर और सशक्त बन चुकी हैं। वर्ष 2014 में जीविका से जुड़ने के बाद उन्होंने अपने जीवन को एक नई दिशा दी।

जीवन ज्योति जीविका स्वयं सहायता समूह, ज्योति जीविका महिला ग्राम संगठन और मौसम जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से जुड़कर अनीता ने सामूहिकता की शक्ति को पहचाना और आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया। समूह में जुड़ने से पहले उसके परिवार की मासिक आय महज पाँच हजार रुपये थी, जिससे घर का खर्च चलाना बहुत कठिन था।

वर्ष 2021 में उन्होंने जीविका से एक लाख रुपये का ऋण लिया और उससे बत्तख पालन का व्यवसाय शुरू किया। यह निर्णय उनके जीवन का बदलाव बिन्दु बन गया। आज उनकी मासिक आय तकरीबन साठ हजार रुपये हो चुकी है। इस आमदनी से उन्होंने ऋण भी समय से वापस कर दिया ।

बत्तख पालन की शुरुआत हालांकि उन्होंने बेहद छोटे स्तर पर की थी, लेकिन मेहनत और लगन के साथ इस कार्य को आगे बढ़ाया। आज उनके पास पर्याप्त संख्या में बत्तख हैं, जिनसे अंडे और मांस दोनों की बिक्री कर वे नियमित आय अर्जित कर रही हैं। गांव के लोग भी उनसे प्रेरित होकर इस व्यवसाय की ओर आकर्षित हो रहे हैं।

अनीता अब न केवल अपने परिवार की आर्थिक ज़रूरतें पूरी कर रही हैं, बल्कि बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और घर के अन्य खर्चों को भी अच्छे से संभाल रही हैं। उनका आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा है।

अनिता की सफलता ने इस बात को साबित किया कि यदि महिलाओं को सही मार्गदर्शन और आर्थिक सहायता मिले, तो वे किसी भी स्थिति को बदल सकती हैं और आत्मनिर्भरता की मिसाल बन सकती हैं।

# संघर्ष और सहयोग से मिली सफलता

मुंगेर जिले के संग्रामपुर प्रखंड के रामपुर पंचायत की नीलु देवी ने जीविका के माध्यम से अपनी किस्मत को नया मोड़ दिया। पहले नीलु देवी का परिवार बेहद कठिन हालात में जीवन यापन कर रहा था। पति वीरेन्द्र कुमार साह गांव में मजदूरी करते थे, जिनकी आमदनी छह से सात हजार रुपये प्रतिमाह थी। इतनी कम आय में चार बच्चों और सास–ससुर सहित पूरे परिवार का गुजर–बसर करना बेहद कठिन था।

मार्च 2016 में नीलु देवी राज जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह की नियमित बैठकों और प्रशिक्षण में भाग लेने से उनमें आत्मविश्वास बढ़ा और उन्होंने कुछ करने की ठानी। पहले चरण में नीलु देवी ने समूह से दस हजार रुपये का ऋण लेकर रामपुर में चाय और नाश्ते की दुकान खोली। उनके अच्छे व्यवहार और पाक–कला ने ग्राहकों को आकर्षित किया और व्यवसाय चल निकला।

समय के साथ उन्होंने समूह से बीस हजार रुपये और ऋण लेकर किराना दुकान की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने समूह से पचास हजार रुपये का तीसरा ऋण लिया और अपनी दुकान में साज–सज्जा और श्रृंगार का सामान भी जोड़ लिया। आज नीलु देवी के पास तीन दुकानें– चाय नाश्ते की दुकान, किराना और श्रृंगार की दुकान हैं, जिन्हें वह और उनके पति मिलकर चलाते हैं।

अब नीलु देवी की मासिक आमदनी पंद्रह से बीस हजार रुपये हो गई है। उनके बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं और परिवार की आर्थिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत आवास एवं स्वच्छ भारत अभियान के तहत शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि भी प्राप्त की है।

नीलु देवी आज गांव की अन्य महिलाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत बन चुकी हैं। जीविका से मिली राह ने उन्हें आत्मनिर्भरता और सम्मान का जीवन दिया।

# योजना, सहयोग और उद्यमिता से सफलता का सफर

पश्चिम चंपारण जिले के बेतिया प्रखंड के बानू छापर गाँव की रहने वाली सोनी देवी आज अपने स्वादिष्ट केकों से न सिर्फ अपने घर की खुशहाली लौटा रही हैं, बल्कि ग्रामीण महिला उद्यमिता की मिसाल भी बन चुकी हैं।

पहले उनका परिवार आर्थिक तंगी से जूझ रहा था। पति राजा पटेल बेतिया शहर स्थित एक बेकरी में काम करते थे, जिससे सीमित आमदनी होती थी। लेकिन खुद का व्यवसाय शुरू करने का सपना वे अपने मन में संजोए हुए थे। पूँजी की कमी के कारण यह सपना अधूरा था।

सोनी देवी वर्ष 2017 से कार्तिक जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ी थीं और नियमित रूप से बैठक में भाग लेती थीं। लगभग 6 माह पूर्व, बैठक में उन्हें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम योजना की जानकारी मिली। योजना के तहत खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए तकनीकी प्रशिक्षण और बैंक ऋण की सुविधा दी जाती है।

बेकरी में अनुभव को देखते हुए सोनी देवी और उनके पति ने इस योजना का लाभ उठाने का निर्णय लिया। उन्होंने डीआरपी दीदी, उद्योग विभाग और बैंक के सहयोग से सभी आवश्यक दस्तावेज तैयार कर आवेदन जमा किया। उनका 7 लाख रुपये का प्रोजेक्ट प्रस्तावित हुआ, जिनमें से 5.39 लाख रुपये का ऋण स्वीकृत किया गया।

इस राशि से उन्होंने ओवन, केक बनाने का उपकरण और यूनिट शेड तैयार किया। 24 मई 2023 को खाद्य प्रसंस्करण इकाई का उद्घाटन हुआ और इसके साथ ही व्यवसाय की शुरुआत हुई। आज वे प्रतिदिन 3000 से 4000 रुपये तक के केक की बिक्री कर लेती हैं, जिससे रोजाना 600 से 700 रुपये की आय हो रही है।

भविष्य में वे एक बिक्री काउंटर खोलना चाहती हैं ताकि उनके केक बेतिया जिले के हर कोने में पहुँच सकें। उनकी यह यात्रा हिम्मत, योजना और उद्यमिता का सुंदर उदाहरण है।

# नई शुरुआत से बदला रीता का जीवन

सीतामढ़ी जिले के बथनाहा प्रखंड स्थित रनौली पंचायत की रहने वाली रीता देवी ने कभी तंगहाली के अंधेरे में दिन काटे। लेकिन जीविका के सहयोग से आज उनके जीवन में उजाला आ गया है।

रीता देवी अपने चार बच्चों और पति के साथ किसी तरह गुजर–बसर कर रही थीं। उनके पति दिल्ली में मजदूरी करते थे, जिससे बमुश्किल उनके घर का खर्च चलता था। आर्थिक तंगी इतनी थी कि परिवार के लिए दो वक्त की रोटी और बच्चों की शिक्षा उनके लिए चिंता का विषय था।

वर्ष 2013 में रीता देवी सूरज जीविका स्वयं सहायता समूह से जुड़ीं। समूह की बैठकों में प्रोत्साहन और मार्गदर्शन से उन्हें नई राह मिली। उन्होंने अपने गाँव में ही बिजली सामग्री और उपकरणों की दुकान खोलने की इच्छा जताई। जीविका समूह से उन्होंने चार बार में कुल मिलाकर 1,60,000 रुपये का ऋण लिया और धीरे–धीरे अपनी दुकान की शुरुआत की।

इस दुकान के जरिए वह हर महीने 20,000 से 25,000 रुपये की आय अर्जित कर रही हैं। अब उनके बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ाई कर रहे हैं और परिवार की जरूरतें भी अच्छी तरह पूरी हो रही हैं।

रीता देवी की सोच अब और भी आगे बढ़ने की है। वे पुराने ऋण को चुकाकर 1,00,000 रुपये का नया ऋण लेकर दुकान में और पूँजी लगाना चाहती हैं ताकि आमदनी और बढ़ सके।

रीता को मिले मार्गदर्शन, सहयोग और प्रशिक्षण ने यह साबित किया कि किसी भी महिला को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है। रीता देवी अब सिर्फ एक उद्यमी नहीं, बल्कि अपने गाँव की प्रेरणा बन चुकी हैं।

# ग्रामीण उद्यमिता से जुड़कर मंजू में आई आर्थिक आत्मनिर्भरता

भागलपुर जिले के खरीक प्रखंड अन्तर्गत मिर्जाफरी गाँव की रहने वाली मंजू देवी ने यह सिद्ध कर दिया है कि सही मार्गदर्शन और सहयोग मिलने से महिलाएँ सफलता की मिसाल बन सकती हैं। एक सामान्य गृहिणी से सफल मसाला उद्यमी बनने की राह में आने वाली तमाम चुनौतियों और मुश्किलों का डटकर सामना करते हुए उन्होंने सफलता का परचम लहराया है। उनका यह सफर न सिर्फ प्रेरणादायक है, बल्कि हजारों ग्रामीण महिलाओं को दिशा देने वाला भी है।

मंजू देवी, आनंद जीविका स्वयं सहायता समूह की सक्रिय सदस्य हैं और बिंदिया जीविका महिला ग्राम संगठन तथा आस्था जीविका महिला संकुल स्तरीय संघ से भी जुड़ी हैं। उनके पति दया आनंद खेती और आटा चक्की का संचालन करते थे, जिससे सीमित आमदनी होती थी। ऐसे में परिवार की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करना भी कठिन हो गया था।

समूह की बैठकों में नियमित भाग लेने के दौरान उन्हें ग्रामीण उद्यमिता विकास कार्यक्रम की जानकारी मिली। योजना के अंतर्गत ग्रामीण स्तर पर नए उद्यम शुरू करने के लिए आर्थिक एवं तकनीकी सहायता दी जाती है। समूह की दीदियों और पति के सहयोग से मंजू देवी ने मसाला उत्पादन एवं बिक्री का काम शुरू करने का निर्णय लिया।

एस.वी.ई.पी. योजना के तहत उन्हें 40,000 रुपये का ऋण प्राप्त हुआ और उन्होंने स्वयं 28,000 रुपये का योगदान किया। इस प्रकार कुल 68,000 रुपये की पूँजी से उन्होंने ''मंजू मसाला भंडार'' की शुरुआत की। चूंकि पहले से ही उनके पास चक्की की मशीन थी, इसलिए मसाला पीसने का काम शुरू करना आसान रहा।

मंजू देवी धनिया, हल्दी, जीरा, काली मिर्च, मिर्च आदि मसालों को खुद सुखाकर, पीसकर और पैक कर बाजार में बेचती हैं। उत्पाद की गुणवत्ता और स्वच्छता के कारण उनकी मसालों की मांग लगातार बढ़ती गई। उन्होंने साल भर में लगभग 2,60,000 रुपये के मसाले की बिक्री की, जिससे उन्हें 1,70,000 रुपये से अधिक की वार्षिक आय हुई। इससे मंजू का हौसला काफी बढ़ा। अब वह और अधिक मेहनत कर रही है, जिससे अपने उद्यम को नई ऊंचाइयों पर पहुंचा सके।

एस.वी.ई.पी. योजना के अंतर्गत उद्यम सहयोगी (सीआरपी–ईपी) द्वारा उन्हें तकनीकी सहयोग मिला। मसाला पीसने की मशीन, पैकिंग सामग्री, स्टिकर डिजाइनिंग और ब्रांडिंग में सहायता दी गई। इससे उनके उत्पाद को एक अलग पहचान मिली।

उनकी उद्यमशीलता को देखते हुए उन्हें प्रधानमंत्री सूक्ष्म खाद्य प्रसंस्करण उद्यम– सीड कैपिटल योजना के अंतर्गत 40,000 रुपये की अतिरिक्त वित्तीय सहायता मिली, जिससे उन्होंने अपने कारोबार का विस्तार किया।

मंजू देवी आज मसाला व्यवसाय का सफलतापूर्वक संचालन कर रही है। उनके प्रयासों से न केवल उनके परिवार की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है, बल्कि गाँव की अन्य महिलाओं को भी स्वरोजगार अपनाने की प्रेरणा मिली है।

मंजू देवी का यह सफर दिखाता है कि यदि महिलाओं को सही अवसर, प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता मिले, तो वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं और अपने साथ–साथ समाज का भी विकास कर सकती हैं।

जीविका, बिहार ग्रामीण जीविकोपार्जन प्रोत्साहन समिति, विद्युत भवन – 2, बेली रोड, पटना – 800021, वेबसाइट : www.brlps.in

- संपादकीय टीम
- श्रीमती महुआ राय चौधरी –कार्यक्रम समन्वयक (जी.के.एम.)
- श्री पवन कुमार प्रियदर्शी – राज्य परियोजना प्रबंधक (संचार)

संकलन टीम
- श्री विकास राव – प्रबंधक संचार, भागलपुर
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, नवादा
- श्री राजीव रंजन – प्रबंधक संचार, बेगूसराय
- श्री रौशन कुमार – प्रबंधक संचार, लखीसराय
- श्री बिप्लब सरकार – प्रबंधक संचार